प्रधानमन्त्री पं०जवाहर लाल नेहरू द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर दिल्ली में लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम सम्बोधन

दिनांक: 15-8-1957.

बहनों और भाइयों और बच्चों,

हम और आप यहां हजारों और लाखों की तादाद में जमा हुए हैं इस दिन को मनाने के लिए। ये दिन जो दसवीं सालगिरह है हमारे आजाद हिन्दी की और जो शताब्दी है उस बड़ी जंग-ए-आजादी की जो इस मुकाम पर सौ बरस हुए हुई थी। काफी तादाद में आप यहां जमा हुए हैं लेकिन आप और हम से ज्यादा यहां और लोग भी जमा हैं या और लोगों की यादें और वो काफिले और वो कारवां वो यहां आए - वो लोग जिन्होंने सौ बरस में कुछ अपनी अपनी हिम्मत दिखाई, कुछ हिन्दुस्तान की खिदमत की कौम की खिदमत की और अपना कर्तव्य कर के फिर चल गुजरे। सारे शायद कुछ वो भी जमा हो यहां इस वक्त या हमारे दिमागों में जमा हों और देखते हों कि आज का दिन सौ बरस बाद हिंदुस्तान का क्या हाल है। आखिर में जिसलिए उन्होंने कोशिश की, खून बहाया, आँसू बहाए, पसीने बहाए, जान दी, उसका नतीजा हासिल हुआ, और उस नतीजे की शक्ल क्या है। इसलिए आज के दिन ये सौ बरस की कहानी हमारे सामने आती है, ये ऊँच और नीच और यहां इस दिल्ली शहर में और खासकर इस लालकिले में एक एक पत्थर उस कहानी को सुनाता है। सामने मेरे ये चान्दनी चौक है, एक मशहूर बाजार दिल्ली का सैकड़ों बरस से। क्या-क्या इस चान्दनी चौक ने देखा, बड़े-2 जलूस साम्राज्यों के, बादशाहों के, मुल्क का करवट लेना, साम्राज्यों का गिरना। नए नए राज्यों का आना। यहां जलूस निकले प्राचीन भारत के, मुगल साम्राज्यों के, अंग्रेजी हाकिमों के। बड़े-बड़े हाथियों पर निकले सब। वो सब जमाना आया और वो सब जमाना गया और अब आजाद हिन्दुस्तान का जमाना आया जिसमें हमारे और आपके सामने ये बड़ा फर्ज आया है कि इस मुल्क को कैसे बनाएं, कैसे चलाएं। सौ बरस की मेहनत का फल हमने उठाया। लेकिन फिर हमारी मेहनत करने का और इस फल को पक्का करने का वक्त आया। दस बरस इस काम को

किया । दस बरस में कुछ हिन्दुस्तान की कुछ शक्ल बदली । कुछ दुनिया में भी खबर पहुँची लोगों के कानों में कि एक नया मुल्क हुआ, एक नया बड़ा मुल्क है । एक मुल्क जिसकी आवाज कुछ और मुल्कों से दूसरी है जो धमकी नहीं देता, जो गुर्राता नहीं, जो चिल्लाता नहीं, क्योंकि उसने और दूसरे सबक सीखें हैं अपने नेताओं के नीचे । महात्मा जी के नीचे जो कि खामोशी से काम करता है लेकिन फिर भी जिसके काम के पीछे कुछ ताकत है, कुछ इरादा है । दस बरस में ये मुल्क दुनिया के मैदान में आया । दुनिया के अखाड़े में हम भी कुछ पहलवान बन के उतरे किसी से लड़ने के लिए नहीं । लेकिन कुछ अपनी खिदमत, कुछ इस दुनिया की खिदमत करने। और आजादी के बोझे ओढ़े क्योंकि आजादी के फायदे हैं, हैं ही लेकिन उसी के साथ जिम्मेदारियाँ हैं और हमने ये ऊँच-नीच देखी । याद है आपको कितनों को आप में से यकद है , यहाँ इतने बच्चे बैठे हैं कि हिंदुस्तान का रूप क्या था इस आजादी के आने के पहले । अगर नहीं याद है आपको तो आप मुकाबला नहीं कर सकते कि क्या-क्या हुआ गाँव में, शहरमें । काम बहुत बड़ा बहुत जबरदस्त और वो काम जादू से नहीं पूरा हो सकता । इन्सान की मेहनत से । जिस इन्सान की मेहनत ने हिन्दुस्तान को आजाद किया, हिंदुस्तान के लोगों ने जिस मेहनत से मुकाबला किया बड़े-बड़े साम्राज्यों का उसी मेहनत से अब हमें इस हिंदुस्तान को बनाना, उसी एकता से उसी जुर्रत से हमें आगे बढ़ना । हम बढ़े आगे और बढ़ रहे हैं और अजीब बात होती है कि जब तेजी से मुल्क बढ़ने की कोशिश करता है तो जितना तेज हो उतना ही उसको मुकाबला करना पड़ता है, उतना ही कभी-कभी ठोकर भी खा जाते हैं । सिर्फ वो लोग नहीं ठोकर खाते जो हर वक्त बैठे रहते हैं और लेटे रहते हैं । लेकिन जब कौम की रफ्तार तेज होती है तो ठोकर भी खाते हैं और ठोकर खा के उठ के फिर भी चलते हैं । इस तरह से हम चले हैं । इस तरह हमने तय की हैं मंजिलें गिर पड़े, गिर कर उठे, उठ कर चले । (तालियाँ) ।

तो ये हुआ । कभी-कभी कुछ लोगों के दिल कुछ ठंडे हो जाते हैं, हिम्मत कुछ पस्त हो जाती है । उफ् ये तो ज्यादा ऊँचा पहाड़ निकला । जितना हम समझते थे , ज्यादा मुश्किलें हैं सामने, ज्यादा दिक्कतें हैं । हम थक गए । इस तरह से बड़े काम नहीं होते । लेकिन अगर आप इधर उधर देखें, हिन्दुस्तान की शक्ल देखें और अपने आस-पास से निगाह

उठा के दूर तक देखें तो आप देखेंगे कैसे ये मुल्क हमारा पुराना हजारों बरस का मुल्क कैसे हल्के-२ जागा.उठा. और सरसब्ज होता जाता है । कैसे आगे बढ़ रहा है । अगर आपके कानों में आवाज आए और दुनिया से, तो आप सुनें कि और दुनिया में हिन्दुस्तान की निस्बत क्या चर्चा है । और. हमें दुनिया के चर्चे की इतनी फिकर नहीं सिवा इसके कि भली बातें अच्छी लगती हैं। हमें इसी तरह से अपने कर्तव्य से अपने फर्ज से इस मुल्क में बड़े काम हमने उठाए हैं और उन बड़े कामों को हम पूरा कर रहे हैं और करेंगे । यकीनन दिक्कतें होंगी । सब मुल्कों में दिक्कतें आजकल हैं। दुनिया में हैं । कुछ अजीब जमाने ने करवट ली है.अजीब रविश है उसकी और आजकल के जमाने के एक तरफ हर वक्त खतरा. ये नए हथियार और एटम और हाइड्रोजन बम के मौजूद है. एक दुनिया के सर पे टंगा हुआ है जाने कब फटे । दूसरे तरफ से और-और सवाल पुरानी दुनिया खतम हो गई । ये नई दुनिया में हम रहते हैं इस एटम बम के जमाने में और उससे या अपनी ताकत से या अक्ल से हम फायदा उठाएं या अजहद नुकसान । मुसीबत । ये हमारी हिम्मत पर. हमारी ताकत पर. हमारी आपस की एकता पर मिल कर चलने पर है । तो फिर इस दस बरस बाद क्या तस्वीर है और आइन्दा की क्या तस्वीर है । दस बरस में हम कुछ जमें . अब दस बरस में हमें आगे बढ़ना है । दस बरस में कुछ पुरानी बातों को झाड़ू से अलग किया. रास्ता साफ किया । पूरा रास्ता साफ नहीं है . काफी काटे वगैरह दाएं-बाएं आगे हैं । लेकिन फिर भी बहुत कुछ साफ किया । चाहे हम अपने राजनीतिक या सियासी मैदान को देखें . चाहे आर्थिक समस्याओं को देखें. चाहे आर्थिक । हर तरफ कुछ रास्ते साफ हुए हैं । कानून से और बातों से और इस कौम के आगे बढ़ने से अपने आप साफ होते हैं । हाँ. अभी काफी साफ नहीं हैं । लेकिन हमें बढ़ना है उस रास्ते पर और जितने हम बढ़ते हैं उतने नए सवाल पैदा होते हैं। आजकल आपके और मुल्क के सामने हैं सवाल तरह तरह के . सवाल हैं कि चीजों का. आसकर खाने के सामान का भाव बढ़ रहे हैं. कीमतें बढ़ती हैं जिससे हरएक के ऊपर कुछ बोझा और आसतौर से उन लोगों पर जिनकी आमदनी

जरा कम से बढ़ता है, यकीनन बढ़ता है और यकीनन इसकी फिक्र करनी है । लेकिन याद रखिए आप कि ये भी किस चीज का नतीजा है । एक तो ये कि दुनिया में कुछ सिलसिला चला, और मुल्कों में कुछ यहां से ज्यादा ही हुआ । लेकिन हिंदुस्तान में भी जो हुआ वो भी एक नतीजा है तेजी से आगे बढ़ने की कोशिश का । जो इस वक्त हिंदुस्तान में चारों तरफ बड़े-2 कारखाने बन रहे हैं, बड़े-2 लोहे के कारखाने और किस-किस चीज के । बड़े-बड़े योजनाएं हैं दरियाओं के जो हमारे गांवों में ढाई लाख गांव में जो योजनाएं चल रही हैं उन सब बातों का नतीजा होता है । क्योंकि ये सब बढ़ने की निशानी है, उसका असर कुछ जमाने तक दामों पे पड़ जाए । क्योंकि उसमे पूरा फायदा अभी निकला नहीं है । लोहे का कारखाना बनता है, लोहे के कारखाने से लोहा नहीं अभी निकलता है । वो बरस दो बरस बाद निकलना शुरू होगा । इसलिए एक बीच का वक्फा हो जाता है जब कि हम अपने कोशिश से पूरा फायदा न उठा सकें । लेकिन अगर कोशिश न हो तो फायदा भी न हो । तो सारा हिंदुस्तान इस वक्त एक कारखाना हो गया है । एक बड़ा कारखाना जहां चाहे किसान हो, चाहे कारीगर ,चाहे कारीगर हो और किसी किस्म का कारखाने का काम करने वाला हो या हमारा इंजीनियर हो या जो कोई हो सब लाखों-करोड़ों आदमी अपने-अपने कामों में लगे हैं । और वो काम हलके-हलके पूरे होते हैं और वो दिन करीब आता है जब उन कामों का फायदा कौम उठा सके । ये हिन्दुस्तान की तस्वीर है । आखिर हिन्दुस्तान को कौन बढ़ाएगा ? कोई बाहर से आ के तो नहीं बढ़ाएगे, आप और आप और आप, हम सब मिल के इसको बढ़ा सकते हैं । कोई गवर्नमेंट के मुल्क से नहीं बढ़ते मुल्क, कानून से आती नहीं बढ़ते बल्कि कौम की ताकत से, कौम की एकता से और जुर्रत से हमारे सामने बहुत सारे बच्चे बैठे हैं । मुबारक हो उनको ये दिन, मुबारक हो उनको आजाद हिन्द जिसमें वो बढ़ रहे हैं और बढ़ कर इस मुल्क की खिदमत करेंगे और मुल्क को आगे बढ़ाएंगे । मुबारक हो आपको इस वक्त जो बारिश हुई तालियों की । अभी कुछ बारिश हुई मुझे खुशी हुई । चाहे आप लोग, बाज लोग पानी से तर हो

जाने से .की फिक्र आप को कुछ हुई हो लेकिन उस बारिश को देख के मुझे खुशी हुई एक निशानी थी इस मुल्क के सरसब्ज होने की । और आपके और हमारे दिलों के सरसब्ज होने की।तालियाँ। ।

तो ये आपके सामने मुल्क फैला हुआ है हिमालय की चोटी से कन्याकुमारी तक और यहां दिल्ली शहर में जिसके पीछे हजारों बरस की कहानी है ये उसकी राजधानी है हम और आप यहां हैं इस दिन को मनाते हैं.खाली दिल्ली शहर की तरफ से नहीं बल्कि हिंदुस्तान की तरफ से । और जगह भी मनाया जाता है ।- और मनाते हैं उसको एक खास तारीखी मौके पर दस बरस हुए यहां आकर इसी दिन .इस दिन तो शायद नहीं सोलह अगस्त के दिन पहली बार मैं यहां बोला. इस लालकिले की दीवारों के ऊपर से । और उस जमाने के बाद हर साल यहां आने का इत्तेफाक हुआ । आप आए हम लोग आए. कुछ याद की पीछे देखा और ज्यादातर आगे देखा । क्योंकि आगे हमें चलना है और इसलिए आगे देखना है । और फिर कुछ अपने इरादों को पक्का कर के । अपने दिल को ज्यादा मजबूत कर के हम अपने-अपने घर वापिस गए .फिर हम आज जमा हुए हैं । सौ बरस की कहानी हमारे पास मौजूद है । और तरह-तरह के नाम हमारे पास आते हैं जिन्होंने हिंदुस्तान की इज्जत बढ़ाई. हिंदुस्तान की शान बढ़ाई और जिन्होंने अपने खून से बुनियाद डाली आजादी की जिसको हम आज मनाते हैं । क्योंकि आजादी का लेना कोई एकदम से जादू से तो होता नहीं उसकी भी ईंट=ईंट कर के लगा के वो आजादी की इमारत बनी । सौ बरस से बननी शुरू हुई और तरह-तरह से बनी आप जानते हैं कैसे शुरू में सौ बरस हुए बड़े जंग हुए । बड़े-2 उसमें हिंदुस्तान के नेता निकले । लोग बहस करते हैं कि सौ बरस की जो आजादी का जंग था उसके निस्बत हमारे इतिहास के लिखने वाले बड़ी-2 किताबें लिखते हैं. और ठीक है । क्योंकि कई राय हो सकती हैं किसने उसका इंतजाम किया. किसने उसका संगठन किया .क्या हुआ क्या नहीं । लेकिन मोटी बात तो ये है कि हिंदुस्तान के लोग. या हिंदुस्तान के अक्सर लोग उठे और जो पराया राज था उसको हटाने की कोशिश की । इसमें कोई शक है किसी को ? और उसमें वो मिल कर उठे

अलग-अलग मजहब के लोग. हिंदू मुसलमान मिल कर उठे. मिल कर कोशिश की और मिलकर मुसीबतें झेलीं । इसमें तो कोई शक नहीं है . कौन किसने उसका पहले से इंतजाम किया था या नहीं ये इतिहास करने वाले सोचें और कोशिश करें जानने की । तो इसलिए यकीनन ये सही बात है कि हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई.जंग वो थी सन सत्तावन में । माना कि उस वक्त का हिंदुस्तान दूसरा था. उस वक्त का हिंदुस्तान राजाओं का था. उस वक्त का हिंदुस्तान बहादुरशाह बादशाह का था । माना. लेकिन जो कुछ उस वक्त का हिंदुस्तान था उसने अपने आजादी की कोशिश की और आम जनता ने भी अक्सर उसमें शिरकत की और बड़े-2 नाम आए 0उसमें आप वाकिफ हैं उन नामों से । लेकिन उन नामों में तात्या टोपे एक बहादुर आदमी ,नाना साहब थे. और लोग थे. मेरे कुंवरसिंह थे बिहार के. मेरे इलाहाबाद के भी एक थे लियाकत अली खां जिन्होंने एक इंतहा दर्जे हिम्मत दिखाई थी लेकिन इन नामों में मुझे तो प्यारा एक नाम है और शायद आपको भी हो लक्ष्मीबाई रानी का । ‡तालियाँ‡ । ये सब नाम हैं । आज हमारे दिलों में हैं. कल रहेंगे और सैंकड़ों वर्ष बाद तक रहेंगे । क्योंकि उन्होंने उस मशाल को जलाया जिसको फिर उनके बाद पुश्त-दर-पुश्त जलाए रखने का काम हमारा और कौम का रहा और जलाया । और हमे इस बात का फख्र है कि हमने भी अपने जमाने में.अपने पुश्त में हमने भी हाथ उठा के उस मशाल को जलता रखा । और उसको कभी नीचे नहीं होने दिया ‡तालियाँ‡ । और जब कभी हमारे हाथ या बाँह कमजोर हुए तब दूसरे लोग मौजूद थे हम से लेकर आगे बढ़ने के लिए । ये पुराने जमाने की बातें हैं लेकिन आप और हम पुराने मुल्क के हैं जिनके पीछे हजारों बरस की कहानी है लेकिन हम एक नए मुल्क भी हैं और कुछ जवानी का जोश भी । एक जवान मुल्क हैं एक तरफ से पांच-छ: हजार बरस पुराने मुल्क हैं. एक तरफ से हम दस बरस की उम्र के बच्चे हैं । लेकिन तगड़े बच्चे हैं . मजबूत बच्चे हैं और जोशे जवानी दिल में है और आगे बढ़ते हुए बच्चे हैं । फिर ये दिन आपको मुबारक हो और इस दिन में हम जरा कुछ समझें कि कहां हम जा रहे हैं. जो लड़ाई सौ बरस

हुए शुरू हुई कुछ सकून से वो दबाई गई । हालांकि आजादी की लड़ाई कभी दबती नहीं है । दब जाए, कभी खतम नहीं होती है । उसके बाद तरह-तरह के बुजुर्ग आए , बड़े नेता आए हमारे उन्होंने उस मशाल को उठा के कुछ रोशन किया हमारे दिलों को दादाभाई नौरोजी आए उन्होंने किया, लोकमान्य तिलक आए उन्होंने मुल्क को हिलाया । महात्मा गांधी आए और उन्होंने इस मुल्क का संगठन बनाया । मुल्क को मजबूत किया मुल्क को नए-नए सबक सिखाए , मुल्क को सबक सिखाए एकता का, मुल्क को सबक सिखाए कि अलग-2 जो मजहब के लोग हैं वो मिल के रहें । मुल्क को सबक सिखाए शांति से, अमन से काम करने का । मुल्क को सबक सिखाए अपने दिल में दुश्मनी नहीं रखने का । एकदम से हिंदुस्तानी की पुरानी याद को उन्होंने ताजा किया । पुरानी याद आपको याद है पार साल इस शहर में और हिंदुस्तान में हमने मनाया था ,क्या मनाया था ? ढाई हजार बरस गौतम बुद्ध की पैदाइश के । गौतम बुद्ध एक हिंदुस्तान का पैदा हुआ आदमी हमारे देश का । हमारे देश में भी अजीब-2 लोग पैदा किए हैं । हजारों बरस तक जो लोगों का दिल हिलाते हैं करोड़ों आदमी जिनके साए में आए हैं , वो सबक फिर से जो हजारों बरस के हिंदुस्तान का था अमन का,शांति का, वो सबक फिर गांधी ने सुनाया और हमारे दिलों में फिर ताजा किया वो सबक । पुरानी यादें आई, पुरानी ताकत आइ,पुरानी संस्कृति,पुरानी सभ्यता,पुरानी तहजीब वो सब आई और उससे हमारे मुल्क की ताकत बढ़ी । उत्तर-दक्षिण,पूरब-पश्चिम के लोग मिले अलग-2 धर्म और मजहब वालों के और शांति से काम किया। और जब आखिरी वक्त आया और ये हमारी लड़ाई आजादी की खतम हुई तो शान से खतम हुई, बदतमीजी से नहीं । शान से हुई, समझौते से हुई और उसी को, उसी शान और समझौते को दस बरस हुए इस दिल्ली शहर में हमने मनाया । याद है आपको वो दिन पंद्रह अगस्त सन सैंतालीस का जब कुछ आप लोग भी एक नशे में आ के आजादी के कुछ थोड़े से पागल हो गए थे । अच्छा था वो पागलपन आजादी के नशे का । तो ये सबक गांधी का । उस सबक ने हमें आजाद किया , उस सबक ने हम में इत्तेहाद पैदा

किया और एकता पैदा की । उस सबक ने हमारा नाम दुनिया में फैलाया, उस सबक ने हमारी इज्जत सारी दुनिया में बढ़ाई । वो सबक आपके दिल में है, आपके कानों में है आप की याद में है, क्योंकि अगर नहीं है तो फिर बुनियाद हमारी जड़ कमजोर हो जाती है । तो इसलिए आज के दिन खास कर हम याद करें । इस गांधी के सबक को । जो जो गांधी जी ने हमें संदेशे दिए जिस रास्ते पर चल कर हम आगे बढ़े और मुल्क आगे बढ़ा । तो उसको अगर हम याद रखें तब यकीनन मुल्क की ताकत बनी रहेगी और हम आगे बढेंगे । हमारी लड़ाई दुनिया में किसी मुल्क से नहीं । हमारे पड़ोसी मुल्क हैं पाकिस्तान जो एक हमारे टुकड़े हैं , हमारे दिल के और बाजू के टुकड़े हैं । कैसे हम सोचें उनसे लड़ना । ये तो एक अपने को ही एक नुकसान पहुंचाना है । और अगर वो हिमाकत से समझें अदावत करना हमसे । तो वो अपने को नुकसान पहुंचाएंगे । ये एक अजीब रिश्ता है हिंदुस्तान का और पाकिस्तान का । अजीब रिश्ता कि रंजिश भी हो, एक दूसरे के खिलाफ कभी-2 कुछ गुस्सा भी चढ़े लेकिन आखिर में वो रिश्ता इतना करीब का हजारों बरस का कि कानूनों से वो नहीं मिट सकता है । और अगर कोई जरा नुकसान जरा हिंदुस्तान को हो तो यकीनन वो पाकिस्तान को उसका नुकसान है और पाकिस्तान को हो तो हिंदुस्तान को है । इसलिए हम चाहते हैं कि हम अमन से रहें, दोस्ती से रहें , पाकिस्तान से हमारे रिश्ते बढें । वो अपनी आजादी में खुश रहें हम अपनी आजादी में । लेकिन इसके माने नहीं हैं जाहिर है कि हम किसी धमकी से दबें या अपने हुकूक को छोड़ दें धमकियों में । (तालियां) । ये न हमारे लिए इन्साफ है न उनके लिए न किसी और के लिए । न मिसाल अच्छी है । चुनांचे हम अपने हक पर कायम रह कर मजबूती से, ठंडे दिल से आगे बढेंगे । हम हर मुल्क से दोस्ती चाहते हैं । हम नहीं पसंद करते हैं इसको जो फलाई जाती है ठंडी लड़ाई और कोल्ड वॉर । हम समझते हैं कि जो ठंडी लड़ाई है इसके माने हैं दुश्मनी हर वक्त दिल में रखना, हसद रखना और ये गलत चीज है । अपने दिल को तंग कर लेने से कोई मुल्क नहीं बढ़ता है । चुनांचे हमारा हाथ फैला हुआ है मिलाने को हर मुल्क से और हर एक से दोस्ती में । लेकिन आखिर में हमारा काम तो अपने मुल्क में है

हमारी इज्जत होगी उतनी जितनी हम अपना काम करेंगे । और अगर आज हमारी दुनिया में इज्जत है, आदर है, कदर है तो इसलिए कि इस दस बरस के काम से दुनिया देख के, समझती है कि एक जबरदस्त कौम फिर मैदान में आई है । काम करने वाली कौम आई है और तेजी से बढ़ रही है । इस दस बरस के काम देख के हमारी दुनिया में कदर है । लेकिन आखिर में चुनावे काम हमारे मुल्क का है और आप और मैं मिलकर इसको करना है । और आप और हमें मिलकर जो और भी दिक्कतें हों उनका सामना करना है, उन पर हावी आना है, आगे बढ़ना है और इस तरह से कदम-ब-कदम कौम आगे बढ़ेगी, कौम की तकलीफें कम होंगी, काम बढ़ेंगे । इस मुल्क में हल्के-2 हम बेकारी को खतम करेंगे और वो जो खासकर हमारे बिचारे मुसीबतजदा भाई-बहन हैं, गांव में या शहर में जिनके ऊपर आज कहीं सैंकड़ों बरस से गरीबी का बोझा है वो बोझे हटें । ये तस्वीर हमारे सामने है । एक मंजिल खत्म हुई आजादी की दस बरस हुए । दूसरा सफर शुरू किया, दूसरी मंजिल आगे है वहाँ भी एक दिन पहुँचेंगे और फिर हम और आप मिल कर इस बात को बताएंगे कि हमने इस मुल्क की गरीबी को भी निकाल दिया जैसे गुलामी को निकाला था ।

जयहिन्द । ।तालियाँ। ।

मेरे साथ आप कहिए तीन बार जयहिंद । जोर से कहिए जयहिंद । फिर से, जयहिन्द । ।प्रत्येक बार समवेत स्वर में जनता द्वारा जयहिन्द का नारा दोहराना । ।